वैश्विक व्यापार का केन्द्र अटलांटिक प्रदेश से हिन्द-प्रशान्त (इंडो-पैसिफिक) प्रदेश की ओर धीरे-धीरे स्थानान्तरित हो रहा है।" इस कथन का परीक्षण कीजिए। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

"The centre of global trade is gradually shifting from the Atlantic region to the Indo-Pacific region." Examine this statement. (Answer in 250 words) 15marks

<u>वैश्विक व्यापार का अटलांटिक से हिन्दसंक्षिप्त रूपरेखा :प्रशान्त की ओर स्थानान्तरण-</u>

<u>टॉपिक क्यों महत्वपूर्ण है?</u>

21वीं शताब्दी में **एशिया का बढ़ता उत्पादन, उपभोग, समुद्री व्यापार, निवेश एवं वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में भूमिका** विश्व व्यापार के गुरुत्व-केंद्र को हिन्द-प्रशान्त की ओर पुनर्संतुलित कर रही है।

➢ **<u>प्रश्न के कीवर्ड</u>**

✓ वैश्विक व्यापार का केन्द्र
✓ अटलांटिक से हिन्द-प्रशान्त
✓ क्रमिक स्थानान्तरण
✓ व्यापारिक गुरुत्व-केंद्र का पुनर्संतुलन
✓ परीक्षण

➢ **मुख्य भाग**

- **हिन्द प्रशान्त की ओर-स्थानान्तरण के प्रमाण**

✓ वैश्विक निर्यात में एशिया की बढ़ती हिस्सेदारी
✓ कंटेनर व्यापार का एशिया में संकेन्द्रण
✓ वैश्विक निवेश का बढ़ता आकर्षण

- **स्थानान्तरण के प्रमुख प्रेरक स्थानान्तरण न होकर 'पूर्ण' क्यों 'धीरे-धीरे'?**

✓ बढ़ता उपभोक्ता बाजार अटलांटिक की मजबूत व्यापारिक संरचना
✓ वैश्विक विनिर्माण केन्द्र का उभार अटलांटिक की वित्तीय एवं सेवा क्षेत्र में बढ़त
✓ वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का पुनर्गठन एशिया की आंतरिक आर्थिक एवं रणनीतिक विविधता
✓ समुद्री मार्गों का रणनीतिक महत्त्व वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं की परस्पर निर्भरता
✓ क्षेत्रीय व्यापारिक समूहों का विस्तार
✓ बंदरगाह एवं परिवहन अवसंरचना का विकास
✓ रणनीतिक खनिज एवं ऊर्जा संसाधन
✓ तकनीकी एवं डिजिटल क्षमता
✓ युवा एवं कार्यशील जनसंख्या

- **<u>स्थानान्तरण की प्रमुख चुनौतियाँ</u>**

✓ भू-राजनीतिक तनाव
✓ समुद्री मार्गों पर अत्यधिक निर्भरता
✓ आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान का जोखिम
✓ जलवायु एवं पर्यावरणीय जोखिम

वैश्विक व्यापार का भौगोलिक केन्द्र स्थिर नहीं होता, बल्कि उत्पादन, उपभोग, जनसंख्या, बंदरगाहों, समुद्री मार्गों तथा वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ बदलता रहता है। 20वीं शताब्दी में यूरोपउत्तरी अमेरिका केन्द्रित– अटलांटिक अर्थव्यवस्था वैश्विक व्यापार की धुरी रही, जबकि 21वीं शताब्दी में चीन, भारत, जापान, दक्षिण कोरिया तथा दक्षिणपूर्व एशिया के उदय से- हिन्दप्रशान्त क्षेत्र का व्यापारिक महत्त्व तेजी से बढ़ा- है।

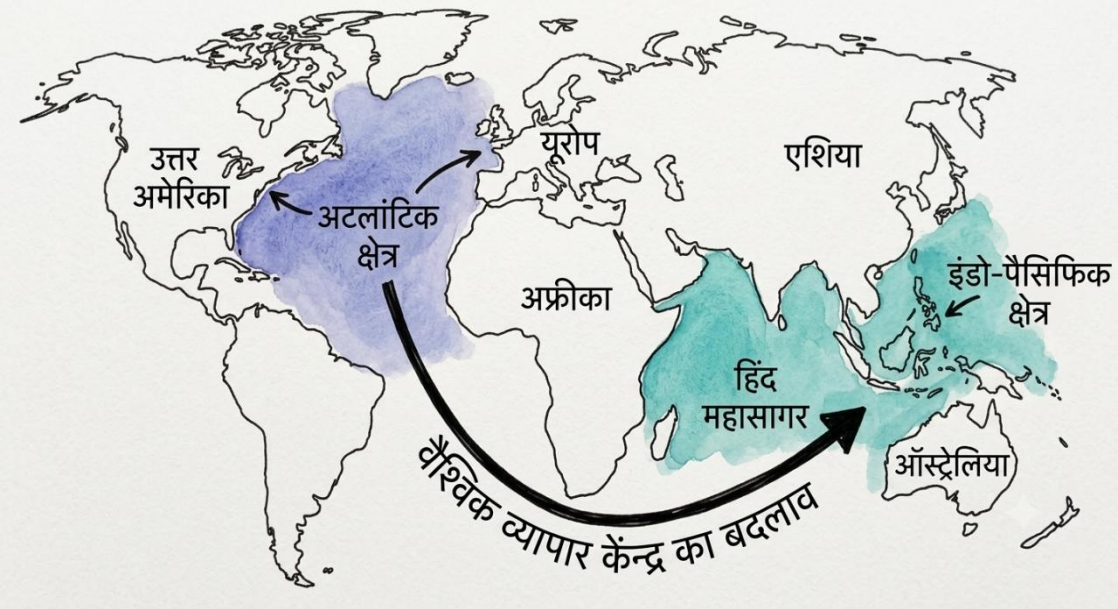

<u>हिन्दप्रशान्त की ओर स्थानान्तरण के- प्रमाण</u>

- 2024 में विकासशील एशिया के बंदरगाहों ने विश्व के **60%** कंटेनर बंदरगाह यातायात को संभाला।
- 2024 में विकासशील एशिया वैश्विक FDI का लगभग **40%** प्राप्त हुआ।
- 2024 में एशिया प्रशान्त का वैश्विक वस्तु निर्यात में हिस्सा-लगभग **40%** था।

➢ **<u>हिन्द-प्रशान्त की ओर वैश्विक व्यापार के स्थानान्तरण के प्रमुख प्रेरक</u>**

- **<u>जनसांख्यिकीय शक्ति:</u>** विशाल युवा एवं कार्यशील आबादी उत्पादन तथा उपभोग दोनों को बढ़ावा देती है।
  - **<u>उदा:</u>** भारत की औसत आयु लगभग **28 वर्ष** है, जबकि यूरोप में यह लगभग **43 वर्ष** है।
- **<u>वैश्विक विनिर्माण केन्द्र के रूप में उभार</u>**: हिन्द-प्रशान्त क्षेत्र इलेक्ट्रॉनिक्स, वस्त्र, ऑटोमोबाइल एवं मशीनरी के उत्पादन का प्रमुख आधार बन गया है।
  - **<u>उदा:</u>** 'चाइना प्लस वन' रणनीति के कारण वियतनाम, थाईलैंड और भारत में विनिर्माण निवेश बढ़ रहा है।
- **<u>समुद्री मार्गों का रणनीतिक महत्त्व</u>**: हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर वैश्विक व्यापारिक एवं ऊर्जा प्रवाह को यूरोप, पश्चिम एशिया और पूर्वी एशिया से जोड़ते हैं।
  - **<u>उदा:</u>** मलक्का जलडमरूमध्य विश्व के प्रमुख ऊर्जा एवं व्यापारिक समुद्री मार्गों में से एक है।
- **<u>बड़े क्षेत्रीय व्यापारिक समूहों का निर्माण</u>**: व्यापार समझौतों ने क्षेत्रीय बाजारों को अधिक एकीकृत करके शुल्क एवं अन्य व्यापारिक बाधाओं को कम किया है।
  - **<u>उदा:</u>** RCEP तथा CPTPP जैसे समझौते।

JOIN US - RESULT MITRA

- **बंदरगाह एवं परिवहन अवसंरचना का विस्तार:** आधुनिक बंदरगाहों, आर्थिक गलियारों और बहु-माध्यमीय परिवहन नेटवर्क में भारी निवेश से व्यापारिक संपर्क बढ़ा है।
    - **उदा: अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC)** भारत को ईरान, मध्य एशिया और यूरोप से जोड़ता है।
- **महत्त्वपूर्ण खनिजों एवं प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता:** ऊर्जा संक्रमण के लिए आवश्यक खनिजों की उपलब्धता क्षेत्र को नई वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में महत्त्वपूर्ण बना रही है।
    - **उदा: इंडोनेशिया का निकल** विद्युत वाहन बैटरी उद्योग के लिए महत्त्वपूर्ण कच्चा माल है।
- **तकनीकी एवं डिजिटल क्षमता का विस्तार:** डिजिटल भुगतान, ई-वाणिज्य और स्मार्ट लॉजिस्टिक्स ने व्यापार को अधिक तेज एवं कम लागत वाला बनाया है।
    - **उदा:** भारत का यूपीआई तथा सिंगापुर की स्मार्ट-लॉजिस्टिक्स व्यवस्था।
- **वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का पुनर्गठन:** अमेरिका–चीन व्यापार तनाव तथा कोविड-19 के बाद कंपनियाँ उत्पादन केन्द्रों में विविधता ला रही हैं।
    - **उदा: भारत, वियतनाम एवं आसियान देशों** में इलेक्ट्रॉनिक्स और अन्य विनिर्माण गतिविधियों का विस्तार।
- **ऊर्जा व्यापार का संकेन्द्रण:** पश्चिम एशिया के ऊर्जा संसाधनों और पूर्वी एशिया के औद्योगिक केन्द्रों के बीच हिन्द महासागर प्रमुख संपर्क क्षेत्र है।
    - **उदा: हॉर्मुज जलडमरूमध्य–अरब सागर–मलक्का जलडमरूमध्य** मार्ग एशियाई अर्थव्यवस्थाओं की ऊर्जा आपूर्ति के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।
- **एशिया का बढ़ता उपभोक्ता बाजार:** बढ़ती आय, शहरीकरण और मध्यम वर्ग के विस्तार ने हिन्द-प्रशान्त को केवल उत्पादन ही नहीं, बल्कि वैश्विक मांग का भी प्रमुख केन्द्र बना दिया है।

    - **उदा:** भारत, चीन तथा आसियान देशों में तीव्रता से बढ़ता उपभोक्ता बाजार।

➢ **स्थानान्तरण धीरे-धीरे' क्यों हो रहा है ?**

- **अटलांटिक की पुरानी व्यापारिक संरचना अभी भी मजबूत है:** यूरोप और उत्तरी अमेरिका के बीच विकसित बाजार, उद्योग और व्यापारिक संस्थाएँ आज भी वैश्विक व्यापार का बड़ा आधार हैं।
    - **उदा:** यूरोपीय संघ अमेरिका का वस्तु एवं सेवा व्यापार–2024 में **€1.6 ट्रिलियन से अधिक** रहा।
- **वित्तीय शक्ति अभी भी अटलांटिक के पास है:** न्यूयॉर्क और लंदन जैसे केन्द्र वैश्विक वित्त, बैंकिंग, बीमा और पूंजी बाजारों में अत्यंत प्रभावशाली हैं।
    - **उदा:** अंतरराष्ट्रीय कंपनियों के वित्तपोषण और वैश्विक मुद्राविनिमय में- **न्यूयॉर्कलंदन धुरी–** की केंद्रीय भूमिका बनी हुई है।
- **वैश्विक व्यापार केवल वस्तुओं का व्यापार नहीं है:** हिन्दविनिर्माण और समुद्री व्यापार में तेजी से आगे बढ़ा है-प्रशान्त वस्तु-, लेकिन उच्चमूल्-य वाली वित्तीय, व्यावसायिक एवं पेशेवर सेवाओं में यूरोपअमेरिका अभी भी बहुत महत्वपूर्ण हैं।-
- **एशिया स्वयं एक समान व्यापारिक क्षेत्र नहीं है:** चीन, भारत, जापान, दक्षिण कोरिया और आसियान के हित हमेशा समान नहीं हैं।
    - **उदा: अमेरिकाचीन व्यापार तनाव–** और तकनीकी प्रतिबंध बताते हैं कि हिन्द प्रशान्त में आर्थिक एकीकरण के साथ-रणनीतिक प्रतिस्पर्धा भी मौजूद है।
- **भौगोलिक एवं सामरिक जोखिम स्थानान्तरण को धीमा करते हैं:** मलक्का, हॉर्मुज और दक्षिण चीन सागर जैसे समुद्री मार्गों पर अत्यधिक निर्भरता व्यापार को जोखिमपूर्ण बनाती है।
    - **उदा:** दक्षिण चीन सागर में क्षेत्रीय विवाद तथा लाल सागर संकट ने दिखाया कि समुद्री व्यापार मार्गों में व्यवधान पूरे एशियाई आपूर्तितंत्र को प्रभावित कर सकता है।-
- **अटलांटिक और हिन्दप्रशान्त परस्पर जुड़े हुए हैं-:** आज की वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला एक ही क्षेत्र-में सीमित नहीं है।
    - **उदा:** एशिया में निर्मित इलेक्ट्रॉनिक सामान यूरोप और अमेरिका के बाजारों में जाता है; वहीं एशियाई कंपनियाँ यूरोपीय-अमेरिकी पूंजी, तकनीक और बाजारों पर निर्भर रहती हैं।

JOIN US - RESULT MITRA

➢ **<u>हिन्दप्रशान्त की ओर स्थानान्तरण की प्रमुख चुनौतियाँ-</u>**

- **भू राजनीतिक तनाव-बढ़ने का जोखिम:** क्षेत्र में चीन चीन तनाव व्यापारिक संबंधों को प्रभावित कर–अमेरिका प्रतिद्वंद्विता तथा भारत– सकते हैं।
    - **<u>उदा:</u>** अमेरिका द्वारा चीन के उन्नत सेमीकंडक्टर क्षेत्र पर लगाए गए प्रतिबंध वैश्विक प्रौद्योगिकी आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित- करते हैं।
- **समुद्री मार्गों पर अत्यधिक निर्भरता:** एशियाकेंद्रित व्यापार कुछ प्रमुख जलडमरूमध्यों पर अत्यधिक निर्भर है-, जिससे किसी अवरोध का व्यापक प्रभाव पड़ सकता है।
    - **<u>उदा:</u>** मलक्का जलडमरूमध्य एशिया के ऊर्जा एवं व्यापार प्रवाह की प्रमुख कड़ी है; यहाँ व्यवधान होने पर पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाएँ प्रभावित हो सकती हैं।
- **आपूर्तिश्रृंखलाओं का संकेन्द्रण-:** उत्पादन का अत्यधिक हिस्सा कुछ एशियाई देशों में केंद्रित होने से प्राकृतिक आपदा, महामारी या राजनीतिक संकट का वैश्विक प्रभाव बढ़ जाता है।
    - **<u>उदा:</u>** कोविड-19 के दौरान एशियाई कारखानों और बंदरगाहों में व्यवधान से इलेक्ट्रॉनिक्स एवं ऑटोमोबाइल उद्योगों को वैश्विक स्तर पर आपूर्ति की समस्या हुई।
- **व्यापारिक मार्गों में अस्थिरता:** हिन्द प्रशान्त को पश्चिम एशिया और यूरोप से जोड़ने वाले समुद्री मार्गों में संकट व्यापार की लागत और- समय बढ़ा सकते हैं।
    - **<u>उदा:</u>** लाल सागर और होर्मुज नाकेबंदी संकट के दौरान जहाजों के मार्ग बदलने से एशिया यूरोप व्यापार की दूरी और– परिवहन लागत बढ़ी।

अतः वैश्विक व्यापार में अटलांटिक का पूर्ण अवसान और हिन्दप्रशान्त का पूर्ण उदय- नहीं हुआ है। बल्कि विश्व व्यापार का गुरुत्वकेंद्र- बहुध्रुवीय और क्रमशः एशियाउन्मुख- हो रहा है। उत्पादन, कंटेनर यातायात, वैश्विक मूल्य श्रृंखला और व्यापारप्रशान्त की भूमिका स्पष्टतः बढ़ी है-वृद्धि में हिन्द-, जबकि अटलांटिक क्षेत्र वित्त, सेवाओं, निवेश और उच्च प्रौद्योगिकी में अपनी- केंद्रीयता बनाए हुए है।

RESULT MITRA